"शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना"

(SOCIAL CONSCIOUSNESS IN NOVELS OF SHATRUGNA PRASAD)

हिंदी में

पी–एच.डी. उपाधि हेतु

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को प्रस्तुत

शोध कार्य की रूपरेखा

हिंदी विभाग

(कला संकाय)

वर्ष : 2014

शोध निर्देशक :

डॉ. विमला सिंघल

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

मा.ला.व. राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, भीलवाड़ा

अनुसंधित्सु :

महेन्द्र कुमार

व्याख्याता,

राजकीय कन्या

महाविद्यालय, पाली

हिंदी विभाग

माणिक्यलाल वर्मा

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भीलवाड़ा

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट – IV

1. शोधार्थी का नाम	(हिंदी में)	–	महेन्द्र कुमार
	(अंग्रेजी में)	–	Mahendra Kumar
2. शोध का विषय	(हिंदी में)	–	शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना
	(अंग्रेजी में)	–	Social Consciousness in Novels of Shatrugna Prasad
3. शोधकार्य स्थल :			
क. संस्था/विभाग जहाँ कार्य किया जा रहा है		–	हिन्दी विभाग, मा.ला.व.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भीलवाड़ा
ख. शोध की भौगोलिक स्थिति यदि हो तो		–	लागू नहीं
4. प्रस्तावित शोधकार्य की प्रस्तावना, महत्ता और उद्देश्य		–	संलग्न 1
5. प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किये गये कार्यों की समीक्षा		–	संलग्न 2
6. प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध संबंधी रिक्तता		–	संलग्न 3
7. मुख्य प्राक्कल्पना, यदि हो		–	लागू नहीं
8. सामग्री और विधि/शोध पद्धति		–	संलग्न 4
9. प्रस्तावित शोध कार्य की अध्याय योजना		–	संलग्न 5
10. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची		–	संलग्न 6

रूपरेखा का अनुमोदन

22.5.15   22.5.2015

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर दिनांक सहित   अभ्यर्थी के हस्ताक्षर दिनांक सहित

Scanned by CamScanner

4. **प्रस्तावित शोध कार्य की प्रस्तावना, महत्ता और उद्देश्य :–**

प्रस्तावना – मानव एक सामाजिक प्राणी है, समाज और मानव का अन्योन्याश्रय संबंध है। मनुष्य के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती और समाज के बिना मनुष्य का जीवन अपूर्ण सा है। समाज में रहकर ही मनुष्य अपने मनुष्यत्व गुण को प्राप्त कर सृष्टि के अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ सिद्ध होता है। मनुष्य की हर गतिविधि का प्रभाव समाज पर पड़ता है और सामाजिक परिस्थितियों से मनुष्य सदैव प्रभावित रहता है। इस प्रकार व्यक्ति और समाज का परस्पर घनिष्ठ संबंध है।

ठीक इसी प्रकार का संबंध साहित्य और समाज का माना जाता है। साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य और समाज का अटूट और अन्योन्याश्रय संबंध है। समाज का सच्चा और पूर्ण चित्र हमें तत्कालीन साहित्य में देखने को मिलता है। वहीं दूसरी तरफ एक काल के साहित्य को समझने के लिए उस काल की परिस्थितियों की जानकारी आवश्यक है। जैसे–जैसे समाज की परिस्थितियों में परिवर्तन होता है वैसे–वैसे साहित्य की प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन होता रहता हैं, क्योंकि साहित्यकार उसी समाज का अंग है जिस समाज में परिवर्तन हो रहा है। साहित्यकार अपने जीवन के साथ–साथ समाज की सामूहिक रूचियों, समस्याओं और प्रवृत्तियों से प्रभावित रहता है और यही प्रभाव उस साहित्यकार के साहित्य में पूर्ण रूप से परिलक्षित होता है। उत्तम साहित्यकार युग विशेष की धड़कनों को, युग सत्य को, जीवन यथार्थ को अपनी रचनाओं में व्यक्त करता है।

साहित्य में सामाजिक चेतना का सीधा–सीधा संबंध समाज से है। चेतना शब्द अपने आप में विस्तृत और अपरिभाषेय है लेकिन साधारण शब्दों में इसका तात्पर्य Consciousness, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति से है। हर युग में समाज में किसी न किसी प्रकार की जागृति या परिवर्तन होते रहते हैं। रूढ़िगत विचारों को छोड़कर किसी नई दिशा में जब समाज प्रवृत होता है और अपनी उन्नति की ओर अग्रसर होता है तो यह कहा जाता है कि समाज में जागृति उत्पन्न हुई है। किसी बुराई के प्रति समाज में जो जागृति होती है वही सामाजिक चेतना का प्राणरूप है। इस प्रकार

Scanned by CamScanner

सामाजिक चेतना मानवीय प्रवृत्तियों से प्रभावित होती है एवं साहित्य सामाजिक चेतना से प्रेरित होता है। साहित्यकार एक संवेदनशील प्राणी है, वह समाज में न्याय–अन्याय, अच्छे–बुरे, पाप–पुण्य, सुख–दुख को देखता है और ये सामाजिक स्थिति उसे कुछ करने के लिए प्रेरित करती हैं। ऐसी स्थिति में उसके मनो–मस्तिष्क में पड़ा भाव विचारलोक में छटपटाने लगता है और वह लेखनी व कागज उठाकर, कल्पना इत्यादि के छींटें लगाकर तिलमिलाते भाव विचारलोक को समाज हित में परोस देता है। जीवन की विसंगतियों, मूल्यहीनता, टूटते रिश्तों और गहराते अविश्वास के बीच भी सामाजिक मूल्यों की पटरी पर चलते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा देना साहित्य का कार्य है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में से मानव जीवन को उसकी गहनता और विभिन्नताओं के साथ अच्छी तरह से व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है उपन्यास। उपन्यास इस युग की निर्विवाद रूप से सर्वप्रिय साहित्य विधा है। यह विधा जीवन से अधिक से अधिक निकट रह कर जीवन का सम्पूर्ण उद्घाटन करती है। जीवन का सर्वांगीण विकास इस साहित्य विधा में हम देख सकते है। जीवन की विविधता, उससे उद्भूत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याएँ आदि उपन्यास का प्रतिपाद्य है। सामाजिक यथार्थ उसका प्राण है। उपन्यास में ही व्यक्ति और समाज के बाह्य और आन्तरिक जीवन की समस्याओं की झलक अधिक मात्रा में मिलती है। साहित्यकार समाज की समस्याओं को अच्छी तरह समझकर साहित्य द्वारा उनको दूर करने का प्रयास करता है। समाज की भावनाओं को अपने कथा साहित्य में व्यक्त करके उपन्यासकार समाज एवं साहित्य के बीच एक सेतु का निर्माण करता है।

उपन्यासों के विभिन्न भेदों में ऐतिहासिक उपन्यास एक ऐसा माध्यम है जिसमें उपन्यासकार उपन्यास को भरपूर ऐतिहासिक रंग देकर उसे वर्तमान के लिए अधिक से अधिक ग्राह्य बनाता है तथा कथ्य को युग विशेष की परिधि से उपर उठाकर सार्वकालिक मानवीय सत्य का रूप देने का प्रयास करता है। उपन्यासकार अपनी प्रतिभा और रूचि के अनुसार इतिहास का उपन्यास में प्रयोग कर सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों द्वारा उपन्यास कला को सप्राण बनाता है।

Scanned by CamScanner

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ऐतिहासिक उपन्यासों के बारे में कहा है कि "ऐतिहासिक उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जिसमें अतीत के पात्र, वातावरण एवं घटनाओं के ज्ञात तथ्यों से कल्पना को मांसल और जीवन्त बनाने का प्रयास होता है।"

ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐसे समाज एवं उसके व्यक्तियों का चित्रण रहता है जो सदा के लिए विलुप्त हो चुका है किन्तु उसने कुछ पद चिह्न अवश्य छोड़े हैं। ऐतिहासिक उपन्यास लिखने के लिए इन पद चिह्नों अथवा ऐतिहासिक अवशेषों का ज्ञान आवश्यक है। ऐतिहासिक वातावरण तथा देशकाल और घटनाओं एवं पात्रों के सजीव तथा यथार्थ चित्रण के लिए उपन्यासकार को उस काल के रहन–सहन, रीति–रिवाज, वेशभूषा एवं राजनीतिक, सामाजिक आदि परिस्थितियों का पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है और इनसे संबंधित छोटी से छोटी बात का ध्यान रखना अपेक्षित है। क्योंकि यही वे साधन है जो अतीत के जीवन तथा युग को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते है और हमें ऐसे काल में पहुचा देते हैं जो कब का बीत चुका है।

ऐतिहासिक उपन्यासों में लेखक की सबसे बड़ी कुशलता देशकाल तथा ऐतिहासिक वातावरण के सजीव चित्रण में निहित है। ऐतिहासिक उपन्यासकार इतिहास तथा कल्पना का समन्वय करता है। वह इतिहास से तथ्यों का संग्रह कर अपनी कल्पना द्वारा उन्हें अधिक आकर्षक, मनोरंजक और प्रभावशाली रूप में चित्रित करता है। अन्य प्रकार के उपन्यास लिखने की तुलना में ऐतिहासिक उपन्यासकार का कार्य अधिक कठिन होता है क्योंकि वह इतिहास के तथ्यवादी विज्ञान तथा कल्पना की कला का मनोरम समन्वय करता है।

सच तो यह है कि इस अतीत का अध्ययन अतीत के लिए नहीं, वर्तमान और भविष्य के लिए किया जाता है। ऐतिहासिक उपन्यास द्वारा अतीत को हमें इसलिए देखना है कि दोष व दुर्बलताओं को त्यागकर गुणशक्तियों को अपनाया जा सके। ऐतिहासिक उपन्यास घटना तथा पात्रों के अव्यक्त तत्वों को व्यक्त करके इतिहास को पूर्णता देता है। एक ओर वह घटनाओं की बाहरी राजनीति तथा स्थूल शृंखला के अन्तःस्रोतों व सामाजिक, सांस्कृतिक, वैयक्तिक प्रेरणाओं को खोज निकालता है और दूसरी ओर पात्रों के अन्तर्जीवन को प्रत्यक्ष करता है।

Scanned by CamScanner

ऐसे उपन्यासों में उपन्यासकार ऐतिहासिक पात्रों, घटनाओं और वातावरण को आधार बनाकर उन सामाजिक विकृतियों, विषमताओं और दूषित परम्पराओं को उजागर करने का प्रयास करता है जो आज भी समाज में उसी रूप में या उससे भी विकृत रूप में मुँह उठाये खड़ी हैं। ऐसे उपन्यास अतीत के पट में समकालीन समाज की अंधरूढ़ियों और परम्पराओं को उजागर करते हुए व्यक्ति को उनके प्रति प्रेरित करके जागरूक व चेतना सम्पन्न बनाने का प्रयास करते हैं। उपन्यासकार अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से तात्कालिक स्थिति का चित्रण करने के साथ वर्तमान सामाजिक समस्याओं को उजागर करने व उनके प्रति जागृति पैदा करके सुखद एवं समृद्ध समाज के निर्माण का प्रयास करता है।

वास्तव में ऐतिहासिक उपन्यास अतीत की पृष्ठ भूमि पर भी अपने वर्तमान समाज की चिंता को ही केन्द्र पर रखकर चलता है। कथानक किसी भी इतिहास से लिया गया हो उनमें उस देश की संस्कृति, समाज और परिवेश को तत्कालीन समय के साथ एक व्यापक मानव सत्य के रूप में उभारा जाता है।

हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की एक सशक्त परम्परा रही है। हिंदी साहित्य में इस परम्परा की शुरूआत सबसे पहले किशोरी लाल गोस्वामी ने की है। आगे चलकर वृंदावन लाल वर्मा, भगवती चरण वर्मा, जयशंकर प्रसाद, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, यशपाल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, चतुरसेन शास्त्री, अमृतलाल नागर, नरेन्द्र कोहली, राजेन्द्र मोहन भटनागर, शत्रुघ्न प्रसाद आदि शीर्षस्थ रचनाकारों ने इस विधा को अधिक सशक्त और लचीला बनाया हैं।

वृंदावन लाल वर्मा ने इतिहास प्रधान उपन्यास ही बहुलता से लिखे है। गढ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, कचनार, लक्ष्मीबाई, मृगनयनी, माधवजी सिंधिया जैसे उच्च कोटि के ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की हैं। इतिहास में कल्पना और रोमांस का समावेश उनके उपन्यासों की विशेषता है। प्रकृति के सुन्दर चित्रण के साथ उनके उपन्यासों के पात्र स्त्री हो या पुरूष मानवीय धरातल पर ही रहते है। वृंदावन लाल वर्मा ने अपनी कथाओं में बुन्देलखण्ड के जीते–जागते चित्रों को अंकित किया हैं। भगवती चरण वर्मा का 'चित्रलेखा' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चित्रित हुआ है किन्तु इसमें प्रमुख रूप से पाप–पुण्य की समस्या को उठाया गया है। आचार्य चतुरसेन

Scanned by CamScanner

शास्त्री ने अनेक ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की है जिनमें 'वैशाली की नगर वधू', 'वयम् रक्षामः' और 'सोमनाथ' प्रमुख है। 'वैशाली की नगर वधू' में बुद्धकालीन भारत की गणतंत्र व्यवस्था का चित्रण है तो 'सोमनाथ' में सोमनाथ मन्दिर पर 1025 ईस्वी में महमूद गजनवी के आक्रमण का वर्णन है। चतुरसेन शास्त्री के उपन्यासों में घटना बहुलता के साथ सामाजिक चेतना का संदर्भ निरन्तर जुड़ा रहता है। यशपाल का ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' वस्तुतः इतिहास नहीं ऐतिहासिक कल्पना का प्रतीक है। इसकी पृष्ठभूमि इतिहास की होते हुए भी इसमें समाज की प्रवृति और गति का चित्र है। यशपाल सामन्ती व्यवस्था की विसंगतियों को उभारते हुए नारी जीवन की विडम्बना का वर्णन करते है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ऐतिहासिक उपन्यासों को नया रूप दिया है। इनके इन उपन्यासों को बहुत ख्याति मिली है। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' आत्मकथा शैली पर लिखा गया है जिसकी कथा वस्तु हर्षवर्द्धन युगीन है तथा जिसमें सभी स्थान ऐतिहासिक है लेकिन कार्य और घटना काल्पनिक है। रांगेय राघव का 'मुर्दो का टीला' ऐतिहासिक उपन्यास है, इसमें मोहन जोदड़ो की सभ्यता और संस्कृति को उपन्यास का आधार बनाया गया है। अमृत लाल नागर का 'शतरंज के मोहरें' लखनऊ को केन्द्र में रख 19 वीं सदी में भारतीय जीवन की उथल–पुथल को अंकित किया है। 'मानस का हंस' एक सार्थक और विशिष्ट कृति है जिसमें तुलसी की प्रासंगिकता आन्तरिक और बाह्य दोनों रूप में प्रकट होती हैं।

शत्रुघ्न प्रसाद आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित एवं चर्चित उपन्यासकार है। शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यास प्रौढ़ चिन्तन, सुलझी हुई अन्तर्दृष्टि और परिपक्व लेखन कौशल का दस्तावेज है। इन्होनें अतीत की विशृंखलित कड़ियों को कल्पना के माध्यम से जोड़ते हुए अपनी संवेदना को अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रकट करने का प्रयास किया है। ये उपन्यास भले ही अतीत के कथ्य को आत्मसात करते हो लेकिन उसमें वर्तमान संदर्भो को प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया है जो पाठक को अपने भविष्य को सुखद बनाने के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

अतीत के कथानक और वर्तमान समाज की समस्याओं के बीच में सामंजस्य स्थापित करने में लेखक को सबसे बड़ी सफलता मिली है। इनके ऐतिहासिक उपन्यास अपने आप में रोचक और प्रासंगिक है। मानव समाज से

Scanned by CamScanner

अविच्छिन्न इनके उपन्यास समाज में नई चेतना को उजागर करने में प्रयासरत रहे है।

Scanned by CamScanner

शोध का महत्व और प्रासंगिकता :–

वर्तमान में हमारा समाज अनेक विगलित रूढ़ियों, परम्पराओं, विसंगतियों और विषमताओं से ग्रस्त है। समाज की इस विकट स्थिति का संबंध निश्चित रूप से हमारे अतीत से है। ऐतिहासिक उपन्यासकार इसी अतीत के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को उजागर करता है तथा उन्हें पाटने के लिए समाज में नई चेतना तथा जागृति का संचार करता है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखना अपने आप में तलवार की धार पर चलने के समान है। उपन्यास कहीं कोरा इतिहास मात्र न बन जाए इस बात की सावधानी उपन्यासकार को शब्द दर शब्द बरतनी पड़ती है। यह अवश्य है कि इतिहास सतत, गतिशील मानव जीवन के यथार्थ के एक बड़े अंश को प्रस्तुत करता है। इससे आज का जीवन सीधा जुड़ा हुआ है। आज का यथार्थ आने वाले कल की भूमिका होता है। ऐतिहासिक यथार्थ की औपन्यासिक रचना के लिए प्रगतिशील जीवन दर्शन की अपेक्षा रहती है क्योंकि हम उपन्यास में जीवन्त मानव और उसकी समस्याओं को समझना चाहते हैं।

इतिहास से हम विभिन्न प्रकार की प्रेरणा प्राप्त कर सकते है क्योंकि इतिहास से हम मनुष्य के कार्यकलाप, व्यवहार, आचार–विचार, चिन्तनशीलता तथा चेतनाशक्ति का प्रकटीकरण पाते है। ऐतिहासिक उपन्यासकार की वास्तविक जमीन यही इतिहास है और वही खड़े रह कर उपन्यासकार अपनी एक अलग जमीन तलासने लगते है जहाँ वह अपनी मौलिक प्रतिभा के दम पर उस इतिहास को भी प्रासंगिक बना देते है।

ऐतिहासिक उपन्यास अतीत के संदर्भ में वर्तमान का ऐसा अध्ययन है जिसमें अतीत अपने वर्तमान संदर्भ के पर्याप्त संकेतों सहित प्रकट होता है। श्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य, समाज और भाषा के साथ राष्ट्र की अविचल संपत्ति है जो आने वाली पीढ़ी को अतीत के तमाम राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्यों का परिचय कराती है। इसमें मनुष्य का जीवन अपने सम्पूर्ण राग–विराग के साथ पुनर्जीवित होता है। अतीत की ऐसी घटनाओं के प्रति सजगता जो समाज विशेष के लिए प्रासंगिक है, जिन्हे एक कालक्रमिक रूप में रखकर देखा

Scanned by CamScanner

जा सकता है और जिनकी अभिव्यक्ति ऐसे रूप में हो जो उस समाज की जरूरतों की पूर्ति करने में सक्षम हो वही इतिहास बोध है।

शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐसी ही सामाजिक चेतना परिलक्षित होती है जिसमें अपने कथ्य एवं पात्रों के माध्यम से समकालीन सामाजिक विडम्बनाओं और विद्रुपताओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इनके ऐतिहासिक उपन्यासों में समाज की छोटी से छोटी समस्या से लेकर गंभीर सामाजिक समस्याओं पर प्रश्न चिह्न लगाया हैं।

साहित्य का समकालीन होना हर दृष्टि से साहित्य होने की पहचान है क्योंकि साहित्य उन शाश्वत मूल्यों, जीवनदायी परम्पराओं और चरित्र को लेकर सामने आता है, जिसकी निरन्तरता को समय अपने साथ लेकर निर्बाध रूप से यात्रा करता है। वेद, उपनिषद, वाल्मीकि रामायण, तुलसीदास का रामचरित मानस, सूरदास का काव्य, कालिदास साहित्य, प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी वर्मा, दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त इत्यादि का साहित्य हर युग के लिए उतना ही अर्वाचीन है जितना अपने समय में था।

लेखक शत्रुघ्न प्रसाद के द्वारा विश्व प्रसिद्ध नालन्दा विश्वविद्यालय के खण्डहर को देख भारतीय इतिहास की पीड़ा को अनुभूत करके ऐतिहासिक उपन्यास के लेखन का संकल्प किया जिससे भारतीय जीवन का यथार्थ सामने आ सके। शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने उपन्यास 'सिद्धीयों के खण्डहर' में उदन्तपुरी नालन्दा विश्वविद्यालय का खण्डहर में बदलने की पीड़ा और यथार्थ को व्यक्त किया है। स्वतंत्रता सैनानी हेमू की जय और पराजय 'हेमचन्द्र विक्रमादित्य' उपन्यास में वर्णित हुई हैं। 'सुनो भाई साधो' उपन्यास में अद्वैत समता द्रष्टा कबीर का संत जीवन चित्रित हुआ है। हरिहर बुक्का के संघर्ष एवं विजय का 'तुंगभद्रा पर सूर्योदय' उपन्यास में चित्रण हुआ है। 14वीं सदी के कश्मीर की मर्मान्तक त्रासदी 'कश्मीर की बेटी' उपन्यास में प्रकट हुई है। याज्ञवल्क्य के माध्यम से वैदिक–व्रात्य का समन्वय 'सरस्वती सदानीरा' उपन्यास में शब्द–बद्ध हुआ है। 16वीं सदी का स्वातंत्र्य संघर्ष 'अरावली का मुक्त शिखर' उपन्यास में प्रस्तुत हुआ है। 17वीं सदी के दारा की समन्वय साधना एवं संघर्ष को 'दाराशिकोह–दहशत का दंश' उपन्यास में अभिव्यक्त है।

Scanned by CamScanner

शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों पर आधारित शोध कार्य मानवीय जीवन व समाज के लिए प्रेरणा स्रोत रहेगा व समाज को नई दिशा देने में कारगर सिद्ध होगा। इस अनुसंधान द्वारा तत्युगीन परिवेशगत समस्या और समाधान का वर्तमान संदर्भ में आकलन किया जा सकता है। अतीत के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को समझने व उजागर करने का सबसे अधिक फायदा यह है कि हम अपने पूर्वजों द्वारा जो कार्य किये गए उनका मूल्यांकन करके उनकों हम वर्तमान से जोड़ सकते है। ऐतिहासिक उपन्यासों में जिन कथाओं, पात्रों, घटनाओं और सामाजिक वातावरण का चित्रण रहता है तथा इनके माध्यम से तात्कालिक समाज की कमजोरियों और समस्याओं को उजागर किया जाता है इससे हम समाज की दुर्दशा का मूल्यांकन कर पाते है। अतीत में हमारें पूर्वजों द्वारा इन सामाजिक विकृतियों के प्रति जो सजगता थी क्या वह अपर्याप्त थी जिसके कारण वे विकृतियाँ आज भी समाज को दूषित कर रही है। ऐतिहासिक उपन्यासों में हमारा अतीत हमारे लिए एक ऐसे दर्पण का कार्य करता है जो न सिर्फ हमारे पूर्वजों की कमियों व भूलों से अवगत कराता है वरन उसके माध्यम से वर्तमान जीवन की विसंगतियों को समझने में भी सहायता करता है। यह अतीत वह माध्यम बनता है जिससे हम पूर्व में की गई गलतियों को सुधार कर समाज में उसके प्रति सजगता व नवीन चेतना का संचार कर सकते है। हम इसी प्रकार के अतीत को देखकर अपने वर्तमान की समस्याओं को और अधिक सटीकता से समझ सकते है तथा उन्हे दूर करने के लिए समाज में जागृति पैदा करके उन्हे दूर करने का प्रयास कर सुखद भविष्य के निर्माण का प्रयास कर सकते है। शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रमुख रूप से अतीत की उन घटनाओं, पात्रों तथा वातावरण को आधार बनाया जिनसे प्रभावित होकर हम प्रेरित हो सके तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त कर हम अपने वर्तमान का पुनर्निर्माण कर सके।

Scanned by CamScanner

शोध का उद्देश्य :–

साहित्यकार अपने साहित्य में चाहे किसी भी काल की चेतना व विषय वस्तु को आधार बनाये लेकिन वह अपने परिवेश व समाज से असंपृक्त नहीं हो सकता। इसलिए साहित्य युग चेतना से परिपूर्ण होता है। वह किसी न किसी रूप में अपने वर्तमान और अपने सामाजिक मूल्यों से जुड़ा ही रहता है। ऐतिहासिक उपन्यासकार भले ही अतीत की गहराई में जाकर गोता लगाता है लेकिन उसकी नजर, उसकी संवेदना अपने परिवेश तथा सामाजिक मूल्यों को परिष्कृत करने में ही रहती है।

हर राष्ट्र का अपना इतिहास होता है तथा उस इतिहास से ही उस राष्ट्र के वर्तमान रूप का निर्धारण होता है जिसे राष्ट्र की वर्तमान पीढ़ी अंगीकार कर आगे बढ़ने का प्रयास करती है। लेकिन उस राष्ट्र तथा राष्ट्र की भावी पीढ़ी को अपने इतिहास अपने अतीत से अवगत कराने का कार्य इतिहासकार करता है।

भारत तथा भारत का इतिहास भी गौरवशाली रहा है इसमें किसी को भी संदेह नहीं है लेकिन इतिहासकारों द्वारा उसे किस रूप में प्रस्तुत किया गया है यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज साहित्यकारों तथा इतिहासकारों द्वारा जो साहित्य या इतिहास प्रस्तुत किया गया है उसे पढ़कर हमारी युवा पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त कर सकती है? क्या हमारी भावी पीढ़ी उस इतिहास का अनुकरण कर अपने भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकती है? निश्चय ही यह विचारणीय व चिन्ताजनक प्रश्न है।

साहित्य में जिस इतिहास को आधार बनाया जाता है क्या वह हमें सत्मार्ग की ओर प्रेरित करता है? क्या वह समाज के अवमूल्यन तथा निरन्तर हो रहे परिवर्तन को समझने में सहायक है? क्या वह हमारें भीतर राष्ट्रीयता के मूल्यों को जगाने में सहायक है? क्या वह हममें सामाजिक चेतना जगाने में सहायक है? क्या वह समाज में समता व समरसता पैदा करने में सहायक है? शोध का प्रमुख उद्देश्य यही है कि शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासकि उपन्यासों में इन्हीं मूल्यों, तत्वों तथा विशिष्टताओं को खोजना व उनका विश्लेषण करके पाठक वर्ग को उनसे अवगत कराना।

Scanned by CamScanner

शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास के संग्रह में से मोतियों के रूप में उन पात्रों, घटनाओं तथा वृतान्तों को मुख्य रूप से आधार बनाया जिनसे पाठक वर्ग प्रेरित हो सके। शत्रुघ्न प्रसाद ने इन ऐतिहासिक घटनाओं तथा वृतान्तों में अपनी कल्पना का रंग भरते हुए अपने साहित्य को समाज के लिए अधिक से अधिक ग्रहणीय बनाने का प्रयास किया है। उपन्यासकार ने अपने उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण तथा पात्रों के चयन में विशेष रूप से सावधानी बरती है। उनके ऐतिहासिक पात्र अपने ऐतिहासिक स्वरूप के साथ–साथ समाज की किसी न किसी विगलित परम्परा तथा रूढ़ी को प्रकट करने के साथ उनका विरोध करते नजर आते है।

शोध के माध्यम से शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यासों में ऐतिहासिक तत्वों के साथ–साथ सामाजिक चेतना किस रूप में उजागर हुई है उसे खोजने का प्रयास किया जायेगा। किस प्रकार उन्होनें अपने उपन्यासों में ऐतिहासिक परिवेश व वातावरण का निर्माण किया है। उस परिवेश में स्थिति व्यक्ति, परिवार, पारिवारिक संबंध, समाज में उनकी स्थिति को किस प्रकार से प्रकट करने का प्रयास किया है। उन परिस्थितियों को किस प्रकार उजागर किया गया जिससे तात्कालिक समाज पूरी तरह से प्रभावित था। धार्मिक आधार पर समाज कितना बँटा हुआ था और समाज पर उनका क्या प्रभाव रहा। आज जो वर्ण व्यवस्था तथा जातिगत विभेद समाज में फैल गया है उसका ऐतिहासिक धरातल पर क्या आधार रहा। तात्कालिक आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों ने समाज को कितना प्रभावित किया इन सब की खोज करना ही शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

शत्रुघ्न प्रसाद ने अपनी लेखन कला के कौशल से किस प्रकार बीते हुए समय के कथानक में प्राणों का संचार कर दिया है। उन्होने अपने उपन्यासों में व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के जीवन मूल्यों को चिह्नित कर उन्हें आत्मसात् करने के लिए प्रेरित किया है। इन्होने अपने उपन्यासों में मानव जीवन के अनेक प्रश्नों और समस्याओं पर विचार करते हुए सत्य की खोज की है। शोध के माध्यम से उपन्यासों की कथावस्तु से समाज की नव दशा व दिशा किस रूप में उभरेगी यह जानना आवश्यक है। इन्हाने अपने उपन्यासों में सभी समस्याओं तथा सामाजिक बुराइयों को

Scanned by CamScanner

उजागर करने के साथ–साथ उनका समाधान प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है। उनके उपन्यास अपने आप में व्यक्ति, परिवार और समाज के अन्तःसम्बधों की गहन जाँच पड़ताल है। इनके उपन्यासों में सामाजिक संरचना के साथ उसके विकृत रूप का यथार्थ वर्णन किया है।

प्रस्तावित शोध कार्य शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक चेतना के उद्देश्य सार रूप में इस प्रकार रहेंगे –

– सामाजिक चेतना का अर्थ और अवधारणा को स्पष्ट करते हुए शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों से संबंधित व्याख्या प्रस्तुत करना।

– ऐतिहासिक पात्रों के चित्रण के साथ सामाजिक पहलुओं को उजागर करना।

– लेखक शत्रुघ्न प्रसाद द्वारा अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में भारत के गौरवशाली इतिहास को माध्यम बनाया जिसकी महतता को उजागर करना।

– ऐतिहासिक समस्याओं को उजागर करने के साथ उनके माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को प्रतिबिम्बित करना।

– स्वातंत्र्योत्तर युग के सशक्त उपन्यासकार शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक परिदृश्य को अन्वेषित करना शोध का उद्देश्य है।

Scanned by CamScanner

5. प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किये गये कार्य की समीक्षा :–

आधुनिक काल में साहित्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ जिनमें सर्वाधिक प्रचलित उपन्यास रहा है। उपन्यास में विषय वस्तु तथा क्षेत्र विविधता की दृष्टि से ये विधा अत्यन्त समृद्ध हुई है। इनमें सामाजिक उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास, मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास, प्रगतिवादी उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, आँचलिक उपन्यास, प्रयोगवादी उपन्यास आदि के रूप में अनेक उपन्यास लिखे गये हैं और इन पर निरन्तर साहित्य सृजन हो भी रहा है। पाठक वर्ग में अधिक प्रचलित होने के कारण उपन्यास लेखन की ओर अनेक साहित्यकार भी आकृष्ट हुए है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अनेक शोध कार्य हुए हैं लेकिन वर्तमान में शोध कार्य की दिशा में तीव्र गति भी आई है। अन्य विधाओं के साथ–साथ उपन्यास विधा पर भी अलग–अलग दृष्टिकोण के आधार पर अनवरत रूप से शोध कार्य हो रहे है। शोधार्थी उपन्यासकार तथा उपन्यास के प्रकार के आधार पर भी अपने शोध को नई दिशा दे रहे हैं। इन सभी उपन्यासों में ऐतिहासिक उपन्यासों की भी एक अविच्छिन्न परम्परा रही हैं। हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा के आरम्भ से ही ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गये तथा आज भी उन पर लेखन कार्य जारी है।

वर्तमान में उपन्यासों पर अलग–अलग दृष्टिकोण के आधार पर युगबोध, युग चेतना, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, यथार्थवाद, ऐतिहासिक चेतना, समकालीन संदर्भ, सामाजिक चेतना, समाज तथा जीवन आदि विविध विषयों पर शोध कार्य हो रहा है।

ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा भले ही सामाजिक उपन्यासों के समान ज्यादा लम्बी नहीं हो लेकिन जितने भी ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गये है उन्होनें पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त की है। यही कारण है कि इन ऐतिहासिक उपन्यासकारों पर अनेक शोध हुए हैं और आज भी अनवरत रूप से शोध कार्य जारी है। चाहे इन उपन्यासकारों में वृंदावनलाल वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल, चतुरसेन शास्त्री

Scanned by CamScanner

आदि उपन्यासकार हो इनके उपन्यासों पर विविध विषयों तथा आयामों से शोध कार्य हुआ है।

लेकिन अब तक 'शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक चेतना' विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने साहित्य में प्रमुख रूप से उपन्यास लेखन को ही आधार बनाया है। अब तक शत्रुघ्न प्रसाद ने सिद्धियों के खण्डहर, शिप्रा साक्षी है, हेमचन्द्र विक्रमादित्य, सुनो भाई साधो, तुंगभद्रा पर सूर्योदय, कश्मीर की बेटी, सरस्वती सदानीरा, अरावली का मुक्त शिखर, दाराशिकोह, दहशत का दंश के रूप में अनेक उपन्यास लिखे हैं तथा अभी भी उपन्यास लेखन कार्य जारी है। इनके पर्याप्त संख्या में लिखे गये ऐतिहासिक उपन्यास समाज को चेतना सम्पृक्त बनाकर नवीन दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते है। इस आधार पर मैंने 'शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक चेतना' विषय पर शोध कार्य करने का चयन किया है। निश्चय ही इस शोध कार्य के लिए मेरा प्रयास मौलिक, नूतन और औचित्यपूर्ण रहेगा।

Scanned by CamScanner

6. प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध संबंधी रिक्तता :–

साहित्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। विषय व्यापकता तथा साहित्य की सर्वप्रचलित विधा होने के कारण उपन्यासों पर प्रचुर मात्रा में शोध कार्य हुआ। ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा में अनेक ऐतिहासिक उपन्यासकारों पर अलग–अलग विषय के आधार पर भी प्रचुर मात्रा में शोध कार्य हुआ है। यद्यपि ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा सामाजिक उपन्यासों की तुलना में कम रही लेकिन फिर भी प्रसिद्धि के कारण ऐतिहासिक उपन्यासों पर भी पर्याप्त मात्रा में शोध कार्य हुआ है। लेकिन 60 के दशक के परवर्ती ऐतिहासिक उपन्यासकारों पर इतना शोध कार्य नहीं हुआ है। इन उपन्यासकारों में शत्रुघ्न प्रसाद ऐसे उपन्यासकार है जिन्होने 80 के दशक से ही ऐतिहासिक उपन्यास लेखन प्रारम्भ कर दिया था जो आज भी अनवरत रूप से चल रहा है। इनके उपन्यासों की विशिष्टता को देखते हुए अपेक्षित शोध कार्य की रिक्तता ही रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से शत्रुघ्न प्रसाद पर अब तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। वर्तमान में इस सुधी ऐतिहासिक उपन्यासकार के उपन्यासों पर कोटा विश्वविद्यालय से शोधार्थी रघुवीर सिंह के द्वारा 'शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यास– एक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य चल रहा है इसके अतिरिक्त अब तक कहीं पर भी शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों के उपर शोध कार्य नहीं हुआ और न ही हो रहा है। अब तक मेरी जानकारी में शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों पर शोध संबंधी रिक्तता ही है। अतः शत्रुघ्न प्रसाद पर मेरा शोध विषय 'शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक चेतना' अपने आप मे नूतन और मौलिक है। इस शोध के माध्यम से शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों के विश्लेषण के साथ उनमें उपलब्ध सामाजिक चेतना से भी पाठक वर्ग को अवगत होने में सहायता प्राप्त होगी।

Scanned by CamScanner

शोध पद्धति :–

प्रस्तुत शोध कार्य विभिन्न ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित युग जीवन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों को केन्द्र में रखकर सम्पन्न किया जायेगा। मध्यकालीन तथा पूर्व मध्यकालीन भारतीय समाज में जो परिवर्तन आये है तथा उन परिवर्तनों के प्रति समाज कितना जागरूक हुआ है। इस बदलते परिवेश में उपन्यासों में वर्णित युगीन स्थितियों के अध्ययन के लिए समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक पद्धतियों का सहारा लेना शोध कार्य के लिए अनुकूल होगा। प्रस्तावित अध्ययन शोध प्रविधि की विभिन्न पद्धतियों का अनुकरण करके ही पूरा किया जायेगा। पूर्वमध्यकाल तथा मध्यकालीन भारतीय समाज में विभिन्न धर्म तथा सम्प्रदायों के आने के कारण सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यधिक परिवर्तन भरा रहा। जिसमें जीवन मूल्य अत्यधिक तेजी से बदलते रहे है। इनके ऐतिहासिक उपन्यासों में वर्णित वस्तु सत्य की छानबीन करते समय मध्यकालीन भारत के परिवेश को ध्यान में रखना आवश्यक होगा। अतः समाजशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक शोध पद्धतियां इस शोध विषय का प्रमुख आधार रहेगी।

शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुसंधान की प्रक्रिया में उपन्यासों में वर्णित विभिन्न विषयों और उनके सूक्ष्म पक्षों को प्रकाशित करने के लिए प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सहायता ली जायेगी। साथ ही पूर्व में अन्य ऐतिहासिक उपन्यासों पर किये गये शोध कार्यो का भी सहारा लिया जायेगा।

उपन्यासकार के व्यक्तित्व व कृतित्व से जुड़े प्रश्नों के लिए स्वयं लेखक से साक्षात्कार करके महत्वपूर्ण जानकारी ली जायेगी, साथ ही गणमान्य विद्वानों व साहित्यकारों से सम्पर्क कर शोध सामग्री एकत्रित करने का प्रयास किया जायेगा। इन्टरनेट व अन्य सहायक पुस्तकों से उपलब्ध जानकारी का उपयोग किया जायेगा। विषय से संबंधित होने वाली विभिन्न संगोष्ठियों से भी जानकारी हासिल करने का प्रयास किया जायेगा। शोध की पारम्परिक विधि, आसन्न कार्य विधि एवं

Scanned by CamScanner

व्याख्यात्मक विधि तथा कार्ड इण्डेक्स पद्धति को आधार बनाकर प्रकाशित ग्रंथों से सामग्री का एकत्रीकरण कर शोध कार्य सम्पन्न किया जायेगा।

Scanned by CamScanner

10. प्रस्तावित शोध कार्य की अध्याय योजना –

विषयानुक्रमणिका

विषय :– शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

प्रथम अध्याय :– उपन्यास का स्वरूप तथा साहित्य का समाजशास्त्र

(i) आधुनिक हिंदी साहित्य में उपन्यास लेखन

(ii) ऐतिहासिक उपन्यास परम्परा – विहंगावलोकन

(iii सामाजिक चेतना – अर्थ, परिभाषा, व्याख्या, अवधारणा

(iv) सामाजिक चेतना– विकासात्मक रूपरेखा

द्वितीय अध्याय :– शत्रुघ्न प्रसाद : व्यक्तित्व एवं उनका रचना संसार

(i) शत्रुघ्न प्रसाद – जीवन, बचपन, माता–पिता, विवाह एवं दाम्पत्य जीवन

(ii) शत्रुघ्न प्रसाद – शिक्षा–दीक्षा, प्रारम्भिक साहित्य, पुरस्कार एवं सम्मान

(iii) अभिरूचियाँ – भ्रमण संबंधी, अध्ययन संबंधी, समकालीन कलाओं के प्रति

(iv) शत्रुघ्न प्रसाद – रचना संसार व अद्यतन रचित उपन्यास

तृतीय अध्याय :– शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों का कथा समय एवं परिवेश

(i) ऐतिहासिक उपन्यासों का कथा समय

(अ) पूर्व मुगलकालीन समय

(ब) मुगलकालीन समय

(ii) ऐतिहासिक उपन्यासों का परिवेश

चतुर्थ अध्याय :– ऐतिहासिक उपन्यासों के पात्र

Scanned by CamScanner

(i) इतिहास पुष्ट पात्र

(ii) ऐतिहासकि परिवेश के जीवन्त काल्पनिक पात्र

पंचम अध्याय :– ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक चेतना

(i) सामाजिक जीवन – स्वरूप एवं समस्या

(अ) युगीन समाज का चित्रण– जातियाँ, वर्ण, आचार–विचार, संस्कार

(ब) सामाजिक सरोकार – विषमताएँ एवं समाधान

(ii) पारिवारिक जीवन

(iii) मध्यम वर्गीय जीवन

(iv) नारी जीवन

षष्ठ अध्याय – उपन्यासों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन

(i) सांस्कृतिक जीवन

(ii) कला एवं साहित्य

(iii) धार्मिक साम्प्रदाय

(iv) धार्मिक परम्पराएँ एवं अन्धानुकरण

(v) धार्मिक साम्प्रदायिकता एवं उनका प्रभाव

सप्तम अध्याय – ऐतिहासिक उपन्यास परम्परा में शत्रुघ्न प्रसाद का योगदान

(i) ऐतिहासिक उपन्यासों में योगदान

(ii) ऐतिहासिक, सामाजिक उपन्यासों में योगदान

उपसंहार – शोध निष्कर्षों का सार – समाहार व संभावनाएँ

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट – शत्रुघ्न प्रसाद : साक्षात्कार

Scanned by CamScanner

9. संदर्भ ग्रंथ सूची

प्राथमिक ग्रंथ

शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यास

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1.	अरावली का मुक्त शिखर	शिवांग प्रकाशन, नई दिल्ली
2.	तुंगभद्रा पर सूर्योदय	पुस्तक भवन, पटना, सन् 2001
3.	दाराशिकोह – दहशत का दंश	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4.	शिप्रा साक्षी है	पुस्तक भवन, पटना, सन् 1986
5.	सरस्वती सदानीरा	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
6.	सिद्धियों के खण्डहर	पुस्तक भवन, पटना, सन् 1983
7.	सुनो भाई साधो	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली सन् 1999
8.	हेमचन्द्र विक्रमादित्य	पुस्तक भवन, पटना, सन् 1989

Scanned by CamScanner

सहायक ग्रंथ

आलोचनात्मक ग्रंथ

क्र.सं.	लेखक का नाम		पुस्तक, प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1.	अजमेर सिंह काजल	–	उपन्यासकार राजेन्द्र यादव संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
2.	अर्चना जैन	–	प्रेमचन्द के साहित्य में सामाजिक चेतना इन्द्र प्रकाशन, दिल्ली, 1979
3.	अर्जुन चव्हाण	–	समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
4.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	–	हिंदी साहित्य का इतिहास अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली सन् 2010
5.	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	–	साहित्य का साथी राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा, 1965
6.	उर्मिल गम्भीर	–	प्रताप नारायण श्रीवास्तव के उपन्यासों का समाज शास्त्रीय अध्ययन आर्यबुक डिपो, नई दिल्ली, 2011
7.	गणपति चन्द्र गुप्त	–	हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 1962
8.	गोपालराय	–	हिंदी उपन्यास का इतिहास राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
9.	गोपीनाथ तिवारी	–	ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार साहित्य रत्न भण्डार, आगरा, 1958
10.	चण्डी प्रकाश जोशी	–	हिंदी उपन्यास समाजशास्त्रीय विवेचन अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, 1962
11.	जयप्रकाश नारायण	–	समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र

Scanned by CamScanner

बिहार हिंदी अकादमी, पटना, 1973

12. देवेन्द्र इस्सर – साहित्य और आधुनिक युगबोध
कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1973

13. नरेन्द्र कोहली – हिंदी उपन्यास : सृजन और सिद्धान्त
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989

14. नरेन्द्र मोहन – आधुनिक हिंदी उपन्यास
मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली, 1975

15. प्रेमचन्द – साहित्य का उद्देश्य
हंस प्रकाशन, प्रयाग, 1954

16. बच्चन सिंह – हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास
राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली सन् 2008

17. महेन्द्र चतुर्वेदी – हिंदी उपन्यास : एक सर्वेक्षण
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1962

18. रमेश तिवारी – हिंदी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक
रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1972

19. राजेन्द्र यादव – उपन्यास : स्वरूप और संवेदना
अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976

20. रामधारी सिंह दिनकर – संस्कृति के चार अध्याय
राजकमल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1955

21. विद्यानिवास मिश्र – देश, धर्म और साहित्य
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1962

22. वी.के. अब्दुल जलील – समकालीन हिंदी उपन्यास : समय और
संवेदना, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2011

23. शंभूनाथ त्रिपाठी – समाज शास्त्र के मूलाधार
किताबघर कानपुर, 1961

24. शोभा पालीवाल – अमृतलाल नागर के उपन्यासों में
समाजिक चेतना,
साहित्यागार जयपुर, 1995

Scanned by CamScanner

25. श्रीनारायण अग्निहोत्री – हिंदी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, 1961

26. सुषमा धवन – हिंदी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961

27. हेतु भारद्वाज – हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास पंचशील प्रकाशन, जयपुर सन् 2008

सहायक पत्र–पत्रिकाएँ

1. आजकल – प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
2. आलोचना – राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली
3. कथादेश – सहयात्रा प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली
4. प्रतिश्रुति – भारतीय विद्याभवन, जोधपुर
5. मधुमति – राजस्थान हिंदी साहित्य अकादमी, उदयपुर
6. सदानीरा – पटना
7. समकालीन साहित्य – किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली
8. सृजन भारती – साहित्य संस्कृति एवं कला विचार मंच, जोधपुर
9. हंस – अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली

Scanned by CamScanner

कोश ग्रंथ

1. वृहद् हिंदी शब्दकोश – संपादक भोलानाथ तिवारी
2. संस्कृत हिंदी कोश – वामन, शिवराम आप्टे
3. हिंदी का शुद्ध प्रामाणिक मानक कोश – संपादक रामचन्द्र वर्मा
4. हिंदी साहित्य कोश भाग 1 – संपादक धीरेन्द्र वर्मा
5. हिंदी साहित्य कोश भाग 2 – संपादक धीरेन्द्र वर्मा

Outlines of the synopsis seen and approved

Signature of the Supervisor with Date

22.5.15

(Dr.(Smt.)Vimla Singhal)

Head of the Department(Hindi)

M.L.V. Govt.P.G. College

Bhilwara(Raj.)

Signature of the Candidate with Date

22.5.2015

(Mahendra Kumar)

Research Scholar , Deptt. of Hindi

M.L.V. Govt.P.G. College

Bhilwara(Raj.)

Scanned by CamScanner

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. ......Mahendra Kumar...... on the above subject if he/she is registered for Ph.D.

2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.

3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.

4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.

5. I have ......04...... (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ......04...... (give the serial number)

6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

Signature of the
Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. ......Mahendra Kumar...... for research work if he/she is registered for Ph.D.

Signature of the Principal/
Director of the Institution with date

Signature of the Head,
Department with date

Scanned by CamScanner